रवि रोदन की दो कविताएं

(1)

बर्फ की चादर और डिजिटल सपनें

हर रात
इस शहर में
जैसे कोई दबे पाँव
ठहर-ठहर कर चलता है
और ढक देता है
बर्फ की चादर से
सपनों की ढेर सारी किताबें।

और जब सुबह होती है
धूप अपने पल्लू बाँधे
चश्में से जिन्दगी को नहीं देख पाती।

बेघर लोग
बर्फ की चादर ओढ़ने से पहले
ईश्वर से दुआ करते हैं
कि उन्हें भूख और ठंड की मार से बचा लेना
जिन्हें वह छोड़ आए हैं।

महाशय,
हम डिजिटल युग में जी रहें हैं
हमारी भूख डिजिटल
हमारी गरीबी डिजिटल
हमारा बहता लहू डिजिटल
पसीना डिजिटल
डिजिटल
डिजिटल

और डिजिटल।
सर्दी की हर रात
मौत अपनी बन्दूक में बारूद भर कर
जिन्दगी के पन्नों पर अपना नाम लिख देती है
लिख देती है खामोशियों के अल्फ़ाज़

महाशय,
उसकी सारी तस्वीरें
कैमरे में बुदक कर बैठी हुई हैं
जब भी मन करे
आइये
डिजिटल सपनों को देखने।

(2)

सुबह की चाय और अख़बार

हर सुबह
घर की चौखट तक
दौड़ आते हैं
सकपकाते हुए
खूब सारे चेहरे
और सहमी हुई आवाजें।

अखबारों की सुर्खियों में
हँसी की किलकारियां को
जैसे गुम हुए वर्षों बीत गए हों...

शब्द कभी ठंडे नहीं पड़ते
वे तो पन्नो में सिमटकर
आग के ही गीत गाते हैं।

सूखी पत्तियों की सरसराहट
और जलते हुए सपनो को
हर सुबह हम देखते हैं
हाथों में चाय का कप थामे हुए।

गांव/शहर
सड़कें/ मीड-डे-मील
जेहाद/पॉलिटिक्स
और कुछ विचलन की कविताएं
चाय की चुसकियाँ लेते हुए
पढ़ लेता हूँ।

सुबह की चाय
जितनी मीठी होती है
काश उतनी ही मीठी हो पाती
बगान की कहानियाँ
क्षुब्ध आँखे
बस इंतजार में हैं
कि कब वह सुनहरी सुबह आए
जब हर ख़बर की मिठास
चाय जैसी लगने लगे।

*(**लेखकीय परिचय:** रवि रोदन सिक्किम के युवा कवि हैं। साहित्यिक गतिविधियों में निरंतर संलग्न और सक्रिय हैं।)*

***